अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान (वर्ष : 2025) दिनांक : 20.12.2025

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

नव पदार्थ (आश्रव-संवर)–50

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में दीजिए– 16

आश्रव–किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) दशवैकालिक सूत्र के दसवें अध्ययन में भिक्षु किसे कहा गया है?

(ख) योग के तीन भेदों में वचन योग को परिभाषित करें।

(ग) स्थानांग वृत्ति में मायाप्रत्यया क्रिया के कौन से दो अर्थ किए गए हैं?

(घ) उपेक्षा असंयम किसे कहते हैं?

(ड़) जीव कर्मों का उपादान कारण नहीं, प्रेरक कारण है किस प्रकार?

(च) किस सूत्र में भाव लाभ के दो प्रकार बताएं हैं? तथा आगम भाव लाभ किसे कहते हैं?

(छ) स्पष्ट करें द्रव्य योगों से कर्म का आगमन नहीं होता?

(ज) अनाभोगिक मिथ्यात्व व अनाभिग्राहिक मिथ्यात्व को स्पष्ट करें।

संवर–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(झ) मनोगुप्ति किसे कहते हैं?

(ञ) सत्कार-पुरस्कार परिषह किसे कहते हैं?

(ट) सामायिक चारित्र की उत्पत्ति किस प्रकार होती है?

प्र. 2 निम्न प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें– 10

(क) **आश्रव**–

आचार्य भिक्षु ने निरवद्य योग को आश्रव क्यों माना?

अथवा

पाप स्थानक और आश्रव किस प्रकार भिन्न है?

(ख) **संवर**–

सिद्ध करें कि मोक्ष मार्ग की आराधना में संवर उत्तम गुणरत्न है।

अथवा

क्या योग को छोड़कर शेष उन्नीस आश्रवों को जीव जब इच्छा हो तब छोड़ सकता है?

प्र. 3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार सहित लिखें– 24

(क) **आश्रव–**

चेतन जीव और जड़ पुद्गल का परस्पर संबंध कैसे होता है? तथा सिद्ध करें कि जीव कर्मों का कर्ता है?

अथवा

'शुभ योग की संवर है तथा शुभ योग ही सामायिक आदि पांचों चारित्र है।' इस संदर्भ में आचार्य भिक्षु के अभिमत को स्पष्ट करें।

(ख) **संवर–**

सम्यक्त्व और सर्वविरति संवर का प्रत्याख्यान से सम्बन्ध का विवेचन करें।

अथवा

उदाहरण सहित सिद्ध करें कि संवर भाव जीव है।

अवबोध (मनुष्य गति से शील धर्म)–30

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 6

(क) क्या दान मात्र पुण्य का हेतु है?

(ख) यथाख्यात चारित्र चरम शरीरी में होता है या अचरम शरीरी में?

(ग) मनुष्य में निर्जरा के भेद कितने हैं?

(घ) संग्रह दान तथा कारूण्य दान किसे कहते हैं?

(ड़) क्या ज्ञान की उपलब्धि क्षयोपशम से होती है?

(च) क्या सम्यक्त्व चारों गतियों में प्राप्त हो सकती है?

(छ) चारित्र का क्या महत्त्व है?

(ज) तिर्यंच का आयुष्य पुण्य प्रकृति है या पाप प्रकृत्ति?

प्र. 5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) अनन्तकाय क्या है?

(ख) वेदक सम्यक्त्व का स्वरूप क्या है?

(ग) क्या उर्ध्व व अधोलोक में भी त्रस जीव (तिर्यंच) है?

(घ) अकर्मभूमि में उत्पन्न बच्चों का पालन पोषण कैसे होता है?

(ड़) सम्यक्त्व को स्थिर कैसे रखा जा सकता है?

(च) एक भव में चारित्र की सम्यग् आराधना करने वाले जीव आगे कितने भवों में चारित्र को प्राप्त कर सकते हैं?

(छ) क्या साधुओं के भोजन करने में धर्म है?

(ज) क्या पूरे जीव जगत को मैथुन सेवन का पाप लगता है?

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) चारित्र कौन से क्षेत्र में होता है? चारित्र की अल्पाबहुत्व का क्या क्रम है?

(ख) श्रुतज्ञान किसे कहते हैं? श्रुतज्ञान के कितने प्रकार हैं?

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र का क्या स्वरूप है?

श्रावक संबोध–20

प्र. 7 कोई तीन पद्य लिखें– 12

(क) शून्यता को भरने वाला पद्य लिखें।

(ख) तीन प्रकार के आहार वाला पद्य लिखें।

(ग) नव तत्त्वों के अनुशीलन से श्रावक जीवन की सार्थकता बताने वाला पद्य लिखें।

(घ) श्रमणोपासक मुद्दुक की प्रशंसा वाला पद्य लिखें।

(ड़) पुण्य पाप आकर्षक स्पन्दन रूप वाला पद्य लिखें।

(च) भावना की नाव से संसार सागर को तरने वाला पद्य लिखें।

प्र. 8 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) विलय की तीन अवस्थाएं कौन सी हैं? उनसे क्या प्राप्त होता है?

(ख) आगार धर्म का पालन करने वाले व्यक्ति के लिए शास्त्रों में कौन से चार शब्द प्रयुक्त होते हैं? वह किस कारण से उपासक कहलाता है?

(ग) दक्षिण के जैन लोगों ने कितने प्रकार के ज्ञान द्वारा कैसे सबका दिल जीत लिया?

(घ) प्रतिमा का अर्थ बताते हुए प्रतिमा के नामों को भी बताएं।

(ड़) तत्प्रतिरूपक व्यवहार का अर्थ लिखें। यह किस व्रत के अंतर्गत आता है?

(च) मनोरथ का अर्थ क्या है? इसे किसका प्रयोग बताया है?